सिन्धु, सरस्वती नदी घाटी सभ्यता

Sandeep Bishnoi
Sub : History
UGC NET

सार

सिन्धु, सरस्वती नदी घाटी सभ्यता या हड़प्पा संस्कृति अनेकों ताम्रपाषाण संस्कृतियों से पुरानी है लेकिन यह उनसे अधिक विकसित संस्कृति है । इस संस्कृति का उदय ताम्रपाषाणिक पृष्ठभूमि में भारतीय उपमहादेश के पश्चिमोत्तर भाग में हुआ । हड़प्पा संस्कृति के अन्तर्गत पंजाब, सिंध और बलूचिस्तान के भाग ही नहीं बल्कि गुजरात, राजस्थान, हरियाणा और पश्चिमी उतर प्रदेश के सीमांत भाग भी थे । ईसा पूर्व तीसरी और दूसरी सहस्त्राब्दी में संसार भर में किसी भी संस्कृति का क्षेत्र हड़प्पा संस्कृति के क्षेत्र से बड़ा नहीं है ।

20वीं शती के तृतीय दशक से लेकर आज तक इतिहासकारों एवम् पुरातत्व शास्त्रियों द्वारा इस सभ्यता के बारे में नए–नए अनुमान एवम् नई–नई खोजें की गई । सैन्धव सभ्यता 2500 ई0पू0 के आस–पास ही पूर्ण विकसित अवस्था में प्रकट होती है । अब तक इस उपमहादेश में हड़प्पा संस्कृति के लगभग 2000–2500 स्थलों का पता लग चुका है । इनमें से कुछ आरंभिक अवस्था के, कुछ उत्तर अवस्था के तथा कुछ परिपक्व अवस्था के हैं, परन्तु जो परिपक्व अवस्था के स्थल हैं, उनकी संख्या सीमित थी किन्तु आज के समय में नई खोजों जैसे राजीगढ़ी की खुदाई, भिर्राना तथा धोलावीरा जैसे नगरों के सामने आने के बाद शोधकर्ताओं का मानना है कि हड़प्पा सभ्यता का विस्तार भारत के बड़े भाग में था । यह सिन्धु नदी के किनारे से लेकर सरस्वती नदी के किनारे तक बसी थी ।

हाल ही में कुछ शोधकर्ताओं ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के साथ मिलकर बहुत ही क्रांतिकारी खोज की है । इनके अनुसार सिंधु, सरस्वती नदी घाटी सभ्यता का काल जो अभी तक लगभग 4500–5500 वर्ष पुराना माना जाता था, अब 8000 वर्ष पुराना माना है तथा इस सभ्यता के बड़े–बड़े क्षेत्र भारत में सरस्वती नदी के किनारे बसे होने के प्रमाण सामने आए हैं ।

भूमिका

हड़प्पा सभ्यता की खोज की शुरुआत का श्रेय दो प्रसिद्ध पुरातत्व शास्त्रियों दया राम साहनी तथा राखलदास बनर्जी को जाता है जिन्होंने क्रमशः हड़प्पा (पंजाब के मान्टगोमरी जिले में स्थित) तथा मोहनजोदड़ों (सिन्ध के लरकाना जिले में स्थित) नामक स्थलों से पुरावस्तुएं प्राप्त करके यह सिद्ध कर दिया कि परस्पर 640 किलोमीटर की दूरी पर बसे यह शहर कभी एक सभ्यता के दो केन्द्र थे । साहनी तथा बनर्जी के पश्चात् सर जॉन मार्शल तथा माध्व स्वरुप वत्स ने इन दोनों शहरों में कई वर्षो तक उत्खनन करके महत्वपूर्ण सामग्रियाँ प्राप्त की । इनके अतिरिक्त कुछ अन्य विद्वानों के.एन.दीक्षित, अर्नेस्ट मैके, आरेल स्टीन, ए.घोष, जे.पी. जोशी आदि ने भी इस सभ्यता की खोज में महत्वपूर्ण योगदान दिया । इस पूरी सभ्यता को ''सिन्धु नदी घाटी की सभ्यता'' अथवा इसके मुख्य स्थल हड़प्पा के नाम पर ''हड़प्पा की सभ्यता'' कहा जाता है परन्तु आज के समय में भारत में सरस्वती नदी के किनारे कई बड़े शहरों में साक्ष्यों के मिलने के उपरान्त अगर हम इसे ''सिन्धु सरस्वती नदी घाटी सभ्यता'' कहे तो अनुचित नहीं होगा ।

इस सभ्यता के प्रकाश में आ जाने से भारतीय इतिहास की प्राचीनता बढ़ जाती है तथा अब इस विश्वास के लिए कारण है कि भारत देश भी मेसोपोटामिया तथा मिश्र की सभ्यता की तरह अपनी एक स्वतन्त्र सभ्यता का विकास कर रहा था। सैन्धव सभ्यता 2500 ई0 पू0 के आसपास अपनी पूर्ण विकसित अवस्था में प्रकट होती है । यह केवल सिन्धु नदी घाटी तक ही सीमित नहीं थी । पाकिस्तान के बलूचिस्तान, सिन्ध व पंजाब के कई प्रांत के साथ भारतीय उपमहाद्वीप के पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, जम्मू कश्मीर तथा उत्तर प्रदेश प्रांतों में पुरातत्वविदों ने इस सभ्यता के बहुसंख्यक स्थलों को खोज निकाला है ।

वर्ष 2002 के आस–पास चेन्नई के राष्ट्रीय समुद्र प्रौद्योगिकी संस्थान (NIOT) के समुद्र वैज्ञानिकों ने गुजरात के तट से 30 किलोमीटर दूर खंभात की खाड़ी में समुद्री जल प्रदूषण के स्तर की जाँच के दौरान समुद्र में 40 मीटर नीचे दबे हुए एक विशाल नगर सभ्यता के अवशेष खोज निकाले । इस नगर तथा सैन्धव सभ्यता के स्थलों में अद्‌भुत समानता पाई गई है । इसके अवशेष 9 किलोमीटर के दायरे में फैले पाए गए। यहाँ से प्राप्त लकड़ी के कुन्दे का परीक्षण बीरबल साहनी इन्स्टीट्यूट ऑफ पोलियोबाटनी, लखनऊ तथा

नैशनल जिओ–फिजीकल रिसर्च इन्स्टीट्यूट के वैज्ञानिकों ने किया तथा इसकी तिथि क्रमशः ई0 पू0 5500 तथा 7500 निर्धारित की । इस क्रान्तिकारी खोज ने यह सिद्ध कर दिया कि विश्व की प्राचीनतम नगर सभ्यता भारतीय भूभाग में ही फली फूली।

इस सभ्यता की उत्तरी सीमा पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में स्थित रहमान ढेरी तथा दक्षिणी सीमा गुजरात प्रान्त में स्थित भोगत्रार थी । ये दोनों स्थल एक दूसरे से 1400 किलोमीटर की दूरी पर हैं । इसी प्रकार सबसे पूर्व में स्थित आलमगीरपुर से सबसे पश्चिम में स्थित सुत्कार्यनडोर नामक पुरास्थल की दूरी 1600 किलोमीटर है । इस सभ्यता के लगभग 2000 से 2500 तक स्थलों की खोज की जा चुकी है । इसके सभी स्थलों से प्राप्त तत्वों में न केवल समता है वरन एकरुपता भी है । ये सभी नगरीय एवं कास्ययुगीन सभ्यता का बोध कराते हैं । नगर–योजन, मृदभाण्डकला, भार और माप की प्रणाली तथा अन्य अनेक बातों में अद्भुत समानता दृष्टिगोचर होती है ।

उत्पत्ति

इतनी विस्तृत सभ्यता होने के बावजूद भी इस सभ्यता के उद्भाव और विकास के सम्बन्ध में विद्वानों में भारी मतभेद है । कुछ विद्वानों जैसे कि सर जॉन मार्शल, गार्डन चाइलड, सर मार्टीमर व्हीलर आदि का मानना था कि सैन्धव सभ्यता की उत्पत्ति मेसोपोटामिया की सुमेरियन सभ्यता से हुई । परन्तु जब हम गहराई से विचार करते हैं तो पाते हैं कि कुछ समानताओं को छोड़कर दोनों सभ्यताओं में बहुत सारी विभिन्नताएँ थी । सैन्धव सभ्भ्यता की नगर व्यवस्था सुमेरेयन से अधिक सुव्यवस्थित थी । दोनों के बर्तत, उपकरण, मूर्तियाँ, मुहरे आदि आकार–प्रकार में काफी भिन्न हैं । यह सही है कि दोनों सभ्यताओं में लिपि का प्रचलन था परन्तु दोनों लिपियाँ परस्पर भिन्न हैं । जहाँ सुमेरियन लिपि में 900 अक्षर हैं वहीं सैन्धव लिपि में केवल 400 अक्षर मिलते हैं । इस प्रकार आज के समय में जब हमें प्राक हड़प्पाई पुरास्थलों में प्रचुर साम्रगियां मिल गई हैं तब यह स्पष्ट हो जाता है कि सैन्धव सभ्यता की जड़ें भारत में ही जमी थी और इसके लिए बाह्रा प्रेरणा की आवश्यकता नहीं थी । यह सभ्यता पूर्वगामी संस्कृतियों के क्रमिक विकास का परिणाम थी जिसके तार मेहरगढ़ के नवपाषाणिक स्थल से जुड़े हैं ।

प्रो0 टी.एन. रामचन्द्रम, के.एन. शास्त्री पुसाल्कर, एस.आर. राव आदि विद्वान आर्यो को ही इस सभ्यता का निर्माता मानते हैं परन्तु अनेक विद्वान इस बात को नहीं मानते क्योंकि दोनों ही सभ्यताओं के रीति–रिवाजों, धार्मिक तथा आर्थिक परम्पराओं में पर्याप्त विभिन्नताएँ दिखाई देती हैं । सैन्धव सभ्यता की खुदाई में भिन्न–भिन्न जातियों के अस्थि–पंजर प्राप्त हुए हैं । इनमें प्रोटो–आस्ट्रलायड (काकेशियन), भूमध्य सागरीय, मंगोलियन तथा अल्पाइन इन चार जातियों के अस्थिपिंजर हैं । मोहनजोदड़ों के निवासी अधिकांश भूमध्यसागरीय थे । इसलिए अधिकांश विद्वानों की धारणा है कि सैन्धव सभ्यता के निर्माता द्रविड भाषी लोग थे किन्तु यह धारणा भी सदिग्ध है । यदि द्रविड सैन्धव सभ्यता के निर्माता होते तो इस सभ्यता का कोई अवशेष द्रविड क्षेत्र में अवश्य मिलता ।

कोटदीजी, कालीबगन, बनावली तथा हड़प्पा आदि की खुदाईयों से प्राप्त प्राक सैधव कालीन स्तर स्पष्टतः नगरीकरण के प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। नगर नियोजन, उत्तर–दक्षिण दिशा में निर्मित भवन, बस्ती का दुर्गीकरण, गढ़ी तथा निचले नगर की अवधारणा, पकी ईंटों का प्रयोग, अन्नागारों का निर्माण आदि के साक्ष्य मिलते हैं । बनावली के अवशेषों से प्रौढ़ हड़प्पन विकास क्रम और अधिक स्पष्ट हो जाता है । अतः इतनी अधिक साम्रगियों के मिल जाने के बाद सैन्धव सभ्यता के लिए किसी अन्य सभ्यता या पाश्चात्य ऐशियाई प्रेरणा को ढूंढने की आवश्यकता नहीं प्रतीत होती तथा यह स्पष्ट हो जाता है कि इस सभ्यता की जड़ें भारतीय उपमहाद्वीप पर ही जमी थी ।

एक नवीन खोज, जिनके जनक पुरातत्ववेता प्रो0 मीडो हैं, में दावा किया गया है कि भारत की सबसे प्राचीन सभ्यता सरस्वती नदी के तट पर सिन्धु सभ्यता के पूर्व (लगभग 3300 ई. पूर्व) फली फूली व विकसित हुई । अब वेदों में वर्णित सरस्वती नदी का अस्तित्व उपग्रह से प्राप्त चित्रों के आधार पर प्रमाणित हो चुका है । इस नदी का बहाव उस समय हिमालय से लेकर वर्तमान हरियाण, राजस्थान और गुजरात तक था । राखीगढ़ी के उत्खनन से इस बात को बल मिलता है और हाल ही में हुई खोज में राखीगढ़ी के साथ–साथ भिर्राना में भी इस सभ्यता के विस्तृत साक्ष्य प्राप्त हुए हैं । भिर्राना जोकि हरियाणा में स्थित है, वैज्ञानिकों ने एकदम नई जगह पर खुदाई शुरु की है । यहां से बड़ी चीजें बाहर निकली हैं जैसे जानवरों की हड्डियाँ, गायों के सींग, बकरियों, हिरन और चिंकारे के अवशेष मिले हैं

तथा सम्भव है कि भविष्य की खुदाइयों में इन क्षेत्रों से और अधिक स्पष्ट प्रमाण प्राप्त हो जाएं ।

सैन्ध सभ्यता के प्रमुख तत्व

नगर तथा भवन

भारतीय इतिहास में नगरों का प्रादुर्भाव सर्वप्रथम सैन्धव सभ्यता में हुआ । हड़प्पा सभ्यता में नगरों की खुदाई का विशेष ध्यान दिया गया है। प्रमुख नगर जिनकी खुदाई की गई है–हड़प्पा मोहनजोदड़ों, चान्हूपड़ों, लोथल, कालीबंगा, बनावली तथा धौलांवीरा आदि इनमें भी क्षैतिज उत्खनन केवल मोहन जोदड़ों का हुआ है ।

हड़प्पा एवम् मोहनजोदड़ों उच्चकोटि के नगर निवेश का उदाहरण प्रस्तुत करते हें । उनका विधान दुर्ग के रुप में किया गया है जिनमें परिखा, प्रकार, द्वार, अट्टालक (बुर्ज), राजमार्ग, प्रसाद, कोष्ठगार, सभा, जलाश्य आदि वस्तु के सभी तत्व पाए जाते हैं । इन नगरों की खुदाई में पू व पश्चिम में दो टीले मिलते हैं । पूर्वी टीले पर नगर तथा पश्चिमी टीले पर दुर्ग था । नगरों में दुर्ग ऊँची और चौड़ी प्राचीरों से घिरे थे तथा प्राचीरों में बुर्ज तथा मुख्य दिशाओं में द्वार बनाए गए थे ।

मोहन जोदड़ों का शायद सबसे महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्थल है विशाल स्नानागार । यह ईंटों के स्थापत्य का सुन्दर उदाहरण है । यह 11.88 मी0 लम्बा, 7.01 मी0 चौड़ा तथा 2.43 मी0 गहरा है । बगल में कपड़े बदलने के कमरे हैं तथा स्नानागार का फर्श पक्की ईंटों का बना है । वृहत स्नानागार के उत्तर पूर्व में 70.1 x 23.77 मीटर के आकार के एक विशाल भवन के अवशेष मिलते है जिससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह पुरोहित आवास होगा । मोहन जोदड़ों की सबसे बड़ी इमारत अनाज रखने का कोठार है जो 45.71 मी0 लम्बा और 15.23 मी0 चौड़ा है । जबकि हड़प्पा के दुर्ग में 6 कोठार मिले हैं जो ईंटों के बने चबूतरे पर दो पाँतों में खड़े हैं । प्रत्येक कोठार 15.23 मी0 लम्बा और 6.09 मी0 चौड़ा है और नदी के किनारे से कुछेक मीटर की दूरी पर है । कालीबंगा में भी नगर के दक्षिण भाग में ईंटों के चबूतरे मिले हैं जो शायद कोठारों के लिए बने होंगें । इस प्रकार स्पष्ट होता है कि कोठार हड़प्पा सभ्यता के महत्वपूर्ण अंग थे ।

इन दो महानगरों के अलावा कई नगरों की भी खुदाई की जा चुकी है जो हैं चन्हुदडो, सुत्कागेनडोर, बालाकोट, अल्लाहदीनों, कोटदीजी, माण्डा, बनावली, रोपड़, भगवानपुरा, कालीबंगा, लोथल, धौलावीरा आदि जहाँ कालीबंगा में यज्ञवेदी तथा जुते हुए खेत के प्रमाण मिलते हैं वहीं लोथल में गोदीबाडे का प्रमाण मिलता है जिससे समुद्री व्यापार होने का पता चलता है।

धोलौवीरा, जोकि गुजरात के कच्छ जिले में स्थित है, की खुदाई से यह सिद्ध हो गया है कि सैन्धव सभ्यता का सबसे प्राचीन और सर्वाधिक सुव्यवस्थित, खूबसूरत तथा सबसे बड़ा नगर सम्भवतः पाकिस्तान में पड़ने वाला मोहनजोदड़ो नहीं बल्कि भारत में पड़ने वाला धौलावीरा था । इन नगर का क्षेत्रफल 100 हैक्टेयर था । जहाँ इस सभ्यता के अन्य नगर केवल दो भागों–दुर्ग व निचला नगर में विभाजित थे, धौलावीरा तीन भागों–दुर्ग, मध्य नगर तथा निचला नगर में विभाजित था । सम्पूर्ण क्षेत्र को घेरती हुई दिवार बनाई गई थी । इस प्रकार यह भारत में स्थित दो विशालतम सैन्धव स्थलों में से एक है । इस प्रकार का दूसरा नगर राखीगढ़ी (हरियाणा) है ।

इस सभ्यता के सभी नगरों की जल निकास प्रणाली अद्‌भुत थी। लगभग सभी नगरों में हर छोटे या बड़े मकान में प्रांगण और स्नानागर होते थे । कालीबंगा के अनेक घरों में कुएँ भी थे । नगरों की सड़के समकोण पर एक दूसरे को काटती थी तथा घरों के द्वार मुख्य सड़क की ओर न होकर अन्दर की ओर होते थे तथा जल निकासी प्रणाली के अन्तर्गत सड़कों के किनारे नालियाँ थी और अक्सर ये ईंटों और पत्थर की सिल्लियों से ढ़की रहती थी । हड़प्पा की निकास प्रणाली तो और भी विलक्षण है । शायद कास्य युग की दूसरी किसी भी सभ्यता ने स्वास्थ्य और सफाई को इतना महत्व नहीं दिया, जितना कि हड़प्पा संस्कृति के लोगों ने दिया ।

सामाजिक जीवन

सैधव निवासियों का सामाजिक जीवन सुखी और सुविधापूर्ण था। उनकी सामाजिक व्यवस्था का मुख्य आधार परिवार रहा होगा । खुदाई में प्राप्त बहुसंख्यक नारी मूर्तियो से अनुमान लगाया जा सकात है कि उनका परिवार मातृसत्तात्मक रहा होगा ।

मोहनजोदड़ो से प्राप्त अवशेषों से हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि समाज में विभिन्न वर्गो का अस्तित्व रहा होगा जैसे विद्वान वर्ग, योद्धा, व्यापारी तथा शिल्पकार एवम् श्रमिक ।

सैन्धव लोग शाकाहारी तथा मासाहारी दोनों प्रकार के भोजन करते थे । गेहूँ, जौ, चावल, तिल, दाल आदि उनके प्रमुख खाद्यान्न थे । भेड़, बकरी, सुअर, मुर्गी, बत्तख, घड़ियाल आदि के मास तथा मछलियाँ खाई जाती थी । इन जानवरों की अधजली हड्डियाँ प्राप्त हुई हैं । उनके वस्त्र सूती व ऊनी दोनों प्रकार के होते हैं और खुदाई में सुईयों के अवशेष मिलने से पता चला है कि वस्त्र सिले होते थे । स्त्रियाँ जूड़ा बाँधती थी तथा पुरुष लम्बे बाल एवम् दाढ़ी–मूँछ रखते थे । विविध प्रकार के आभूषण जैसे कण्ठहार, कर्णफूल, हँसुली, भुजबांद, कड़ा, अँगूठी, करधनी आदि पहनते थे । हड़प्पा से एक सोने का तथा मोहनजोदड़ों से एक गोमेद का हार प्राप्त हुआ है । स्त्रियों के श्रृंगार प्रसाधनों के भी प्रमाण मिलते हैं । चन्हूदडो से लिपिष्टिक एवम् नौशारों तथा मेहरगढ़ से सिन्दुर के प्रचलन के उदाहरण प्रस्तुत होते हैं । इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि माँग में सिन्दुर भरने की प्रथा का प्रचलन हड़प्पाकालीन है ।

सैन्धव निवासी आमोद प्रमोद के भी प्रेमी थे । पासा इस युग का प्रमुख खेल था । हड़प्पा में मिट्टी, पत्थर तथा कांचली मिट्टी के बने सात पासे मिलते हैं । कच्छ की खड़ी के पंचम द्वीप में स्थित कुरन नामक गाँव में खुदाई के दौरान दो स्टेडियम मिले हैं । जिनका उपयोग सामाजिक कार्यक्रमों, सामुदायिक बैठकों तथा खेलकूद के लिए किया जाता था । यही कुरन क्षेत्र अपने स्टेडियम के लिए प्रसिद्ध था वहीं लोथल अपने गोदीबाडे के लिए । उत्खन्न में बहुसंख्यक अस्त्र–शस्त्र, औजारों व हथियारों के नमूने मिलते हैं । युद्ध अथवा शिकार में तीर–धनुष, परशु, भाला, कटार, गदा, तलवार आदि का प्रयोग होता था । अस्त्र–शस्त्र सामान्यतः तांबा अथवा काँसे के बनते थे । स्पष्ट है कि युद्ध सम्बन्धी उपकरण साधारण कोटि के हैं जो इस बात का साक्षी हैं कि इस सभ्यता के लोगों ने भौतिक सुख–सुविधा की ओर ही विशेष ध्यान दिया था ।

आर्थिक जीवन

कृषि तथा पशुपालन

सैन्धव निवासियों के जीवन का मुख्य उधम कृषि कर्म था । सिन्धु तथा उसकी सहायक नदियाँ उर्वरा मिट्टी बहाकर लाती थी जिनमें पैदावार काफी अच्छी होती थी । कालीबंगा से जुते हुए खेतों के प्रमाण मिलते हैं । लोधल तथा रंगपुर से बाजरे की खेती के प्रमाण मिलते हैं । सूती वस्त्र के अवशेषों से निष्कर्ष निकलता है कि यहाँ के निवासियों ने ही सर्वप्रथम कपास की खेती प्रारम्भ की होगी । फलों में केला, नारियल, खजूर, अनार, नींबू, तरबूज आदि का उत्पादन होता था । मोहनजोदड़ों से मिट्टी के बने एक हल का प्रारुप तथा बनावली से मिट्टी के बने हल का पूरा प्रारुप प्राप्त हो चुके हैं ।

उस समय सिक्कों के प्रचलन का निश्चित प्रमाण नहीं मिलता । अतः सम्भव है कि विनिमय अनाज के माध्यम से ही होता रहा हो । इनके अतिरिक्त लोग घरों में अनाज रखने के लिए खत्तियां भी बनाते थे । हड़प्पा से इस प्रकार की तीन खत्तियां मिलती है । कालीबंगा से बड़े आकार के मर्तबान एक के ऊपर एक करके रखे हुए मिलते हैं । इससे सूचित होता है कि अनाज का अतिरिक्त उत्पादन होता था । कृषि के साथ–साथ पशुपालन का भी विकास हुआ । सैन्धव मृदभाण्डों, मुहरों पर की गई चित्रकारियों तथा प्राप्त जीवाश्मों के आधार पर हम उनके पालतू पशु–पक्षियों के विषय में अनुमान लगा सकते हैं । कूबडदार वृषभ का अंकन मुहरों पर बहुतायत में मिलता है । अन्य पालतू पशुओं में बैल, गाय, भैंस, कुत्ते, सूअर, भेड़, बकरी, हिरन, खरगोश आदि थे । हाथी दाँत के प्रमाण से हाथी से परिचित होने का पता चलता है तथा कई जगह पर कूबडदार ऊँट के जीवाश्म मिले हैं जिससे ऊँट से परिचित होने का प्रमाण मिलता है । जहाँ तक घोड़े का प्रश्न है, पहले यह मान्यता थी कि सैन्धव लोग घोड़े से परिचित नहीं थे परन्तु अब लोथल, सुरकोटदा, कालीबंगा आदि स्थलों से घोड़े की मृण्मूर्तियां, हड्डियां, जबड़े आदि से अवशेष मिल जाने पर अब यह सुनिश्चित हो गया है कि सैन्धव लोग घोड़े से भी परिचित थे ।

शिल्प तथा उद्योग धन्धे

हड़प्पा सभ्यता कांस्य युग की है । यहाँ के लोग पत्थर के बहुत सारे औजारों और उपकरणों का तो प्रयोग करते ही थे बल्कि ये कांस्य के निर्माण और प्रयोग से भी भली–भाँति परिचित थे । सामान्यतः कांसा, तांबे में टिन मिलाकर धातु शिल्पियों द्वारा बनाया जाता था, पर दोनों में से एक भी धातु आसानी से उपलब्ध नहीं थी । अयस्कों की अशुद्धियों से लगता है कि तांबा राजस्थान की खेत्री ताम्र खानों से मंगाया जाता होगा हालाँकि यह बलूचिस्तान से भी मंगाया जाता था । टिन शायद अफगानिस्तान से कठिनाई के साथ मंगवाया जाता था, यद्यपि बताया गया है कि उसकी कुछ पुरानी खदानें हजारीबग और बस्तर में पाई गई है ।

हड़प्पाई शहरों में कई अन्य महत्वपूर्ण शिल्प भी चलते थे । मोहनजोदड़ों से बने हुए सूती कपड़े का एक टुकड़ा निकला है और कई वस्तुओं पर कपड़े की छाप देखने में आई है । कताई के लिए तकलियों का इस्तेमाल होता था । बुनकर ऊनी और सूती कपड़ा बुनते थे । ईंटों की विशाल इमारतें बताती हैं कि स्थापत्य (राजगीरी) महत्वपूर्ण शिल्प था । हड़प्पाई लोग नाव बनाने का काम भी करते थे । स्वर्णकार चाँदी, सोना और रत्नों के आभूषण बनाते थे । सोना चाँदी सम्भवतः अफगानिस्तान से और रत्न दक्षिण भारत से आते थे । हड़प्पाई कारीगर मणियों के निर्माण में भी निपुण थे । कुम्हार के चाक का खूब प्रचलन था और हड़प्पाई लोगों के मृदमांडों की अपनी खास विशेषताएं थी । ये भाडों को चिकने और चमकीले बनाते थे ।

व्यापार

सिन्धु घाटी के लोगों के जीवन में व्यापार का बड़ा महत्व था । इसकी पुष्टि हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और लोथल से अनाज के बड़े–बड़े कोठारों के पाए जाने से ही नहीं होती, बल्कि बड़े भूभाग में ढेर सारी मिट्टी की मुहरों (सील) एकरुप लिपि और मानकीकृत मापतोलों के अस्तित्व से भी होती है । वे लोग पत्थर, धातु, हड्डी आदि का व्यापार करते थे लेकिन अपेक्षित कच्चा माल उनके नगरों में उपलब्ध नहीं था तथा सारे आदान प्रदान विनिमय

द्वारा ही होता था । अपने तैयार माल और सम्भवतः अनाज भी नावों और बैलगाड़ियों पर लाद कर पड़ोस के इलाकों में ले जाते और उन वस्तुओं के बदले धातुएं ले आते । वे अरब सागर के तट पर जहाज रानी करते थे तथा पहिया से परिचित थे । हड़प्पा में ठोस पहियों वाली गाड़ियां प्रचलित थी ।

हड़प्पाई लोगों का व्यापारिक संबंध राजस्थान, अफगानिस्तान और ईरान से भी था । उन्होंने उत्तरी अफगानिस्तान में अपनी व्यापारिक बस्ती स्थापित की थी । जिसके सहारे उनका व्यापार मध्य एशिया के साथ चलता था । उनके नगरों का व्यापार दजला–फरात प्रदेश के नगरों के साथ चलता था । बहुत–सी मुहरें मेसोपोटामिया की खुदाई से निकली हैं ।

हड़प्पाई लोगां ने लाजवर्द मणि का सुदूर व्यापार चलाया था । 2350 ई0 पू0 के आसपास और उसके आगे के मोसापोटामियाई अभिलेखों में मेलुआ के साथ व्यापारिक संबंध की चर्चा है । मेलुहा सिंध क्षेत्र का प्राचीन नाम है । मेसोपोटामिया पुरालेखे में दो मध्यवर्ती व्यापार–केन्द्र का उल्लेख मिलता है ''दिल्मन और मकान'' ये दोनों मेसोपोटामिया और मेलुहा के बीच में है । दिलमन की पहचान फारस की खाड़ी के बहरैन से की जा सकती है जहाँ आज भी हजारों कब्रे खुदाई का इंतजार कर रही हैं ।

धार्मिक प्रथाएँ

सैन्धव नगरों की खुदाई में किसी भी मन्दिर, समाधि आदि के अवशेष नहीं मिलते परन्तु कालीबंगन में यज्ञवेदी अवश्य मिली हैं । नारी मूर्तियाँ बहुतायत से मिलती हैं । एक मूर्तिका में स्त्री के गर्भ से निकलता पौधा दिखाया गया है, संभवतः पृथ्वी देवी की प्रतिमा है । इससे मालूम होता है कि यहाँ के लोग धरती को उर्वरता की देवी समझते थे । पुरुष देवता एक मुहर पर चित्रित किया गया है । उसके सिर पर तीन सींग है । वह योगी की मुद्रा में बैठा है । उसके चारों ओर एक हाथी, एक बाघ और एक गैंडा है और आसन के नीचे एक भैंसा है और पाँवों पर दो हिरण है । मुहर पर चित्रित देवता को पशुपति महादेव होने का अनुमान लगाया जाता है । निसंदेह हम यहाँ लिंग पूंजा का भी प्रचलन पाते हैं जो कालान्तर में शिव की पूजा से जुड़ गई तथा ऋग्वेद में लिंग पूजन अर्नाय जातियों की भी चर्चा है।

सिंधु क्षेत्र में वृक्ष पूजा तथा पशु पूजा भी करते थे । इनमें सबसे ज्यादा महत्व पीपल तथा एक सींग वाला जानवर और कूबड वाले सांड को दिया जाता था । आज पीपल व सांड की हिन्दु धर्म में पूजा होती है ।

इन बातों से स्पष्ट होता है कि सिंधु प्रदेश के निवासी वृक्ष, पशु और मानव के स्वरुपों में देवताओं की पूजा करते थे, परन्तु वे इनके लिए मंदिर नहीं बनाते थे जेसा कि प्राचीन मिश्र और मेसोपोटामिया में बनाया जाता था । अन्त में हम यही कहेंगे कि जब तक सिंधु लिपि पढ़ी नहीं जाती तब तक सैन्धव लोगों के धार्मिक विश्वासों के बारे में कुछ स्पष्ट नहीं कहा जा सकता केवल अनुमान ही लगाया जा सकता है ।

कला एवम् स्थापत्य

सैन्धव सभ्यता के अन्तर्गत हमें कला का सुविकसित स्वरुप देखने को मिलता है । इस सभ्यता के शासक तथा समृद्ध व्यापारी कला के प्रेमी थे तथा इसके विकास को पर्याप्त योगदान दिया । इस सभ्यता में हमें वास्तुकला, मूर्तिकला, उत्कीर्ण कला, चित्रकला, मृदमाण्ड कला आदि के सम्यक रुप में उन्नत होने के प्रमाण मिलते हैं । लेखन कला को हम देखते तो सैन्धव लोग इससे परिचित थे । यद्यपि हड़प्पाई लिपि का सबसे पुराना नमूना 1853 में मिला था और 1923 तक पूरी लिपि प्रकाश में आ गई । लिपि में कुल मिलाकर 250 से 400 चित्राक्षर हैं और चित्र के रुप में लिखा हर अक्षर किसी ध्वनि, भाव या वस्तु का सूचक है । वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरण यहाँ के नगर तथा भवन हैं जिनका विवरण ऊपर दिया जा चुका है।

राजनीतिक संगठन

हमें सैन्धव सभ्यता के राजनीतिक संगठन का कोई स्पष्ट आभास नहीं है किन्तु यदि सिन्धु सभ्यता की सांस्कृतिक एकता पर ध्यान दिया जाए तो ऐसी एकता किसी केन्द्रित सत्ता के बिना संभव नहीं हुई होगी । यदि हड़प्पाई सांस्कृतिक अंचल को राजनीतिक अंचल भी समझा जाए, तो इस उपमहादेश ने मौर्य साम्राज्य की स्थापना से पूर्व इतनी बड़ी राजनीतिक इकाई कभी नहीं देखी । सभी बातों पर अध्ययन के उपरान्त यह अनुमान लगाया

जा सकता है कि हड़प्पाई शासकों का ध्यान विजय की ओर उतना नहीं था जितना ध्यान वाणिज्य की ओर था और हड़प्पा का शासन संभवतः वणिक वर्ग के हाथ में था क्योंकि सिंधु संभ्यता में अस्त्र–शस्त्र का अभाव दिखाई देता है ।

सभ्यता का पतन

परिपक्व हड़प्पा संस्कृति का आस्तित्व मोटे तौर पर 2550 ई0 पूव और 1900 ई0 पू0 के बीच रहा । हड़प्पा संस्कृति का उद्भव जानना जितना कठिन है उतना ही कठिन उसका अन्त जानना है । यद्यपि इस संभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता कि बाढ़ के कारण सिन्धु तट पर बसे कुछ प्रमुख नगर नष्ट हो गये तथापि इससे यह बात स्पष्ट नहीं होती कि इस सभ्यता के जो नगर सिंधु अथवा अन्य नदियों के तट पर स्थित नहीं थे, उनका विनाश कैसे हुआ । बाहरी आक्रमण या आर्य आक्रमण को भी इस सभ्यता के पतन का कारण माना जाता था परन्तु आधुनिक खोजों और अध्ययन के अनुसार आर्य आक्रमण को विनाश का मुख्य कारण नहीं माना जा सकता ।

इसके और भी बहुत से कारण बताए जाते हैं । आरेल स्टीन, ए.एन.घोष आदि विद्वानों का मत है कि सैन्धव सभ्यता का विनाश जलवायु परिवर्तन के कारण हुआ वहीं कुछ विद्वान का मत है इसका विनाश जलप्लावन के कारण हुआ, जिसके कारण जमीन दलदल तथा कीचड़ युक्त हो गई, यातायात बाधित हुआ एवम् पैदावार घट गई । इस कारण लोग यहां से प्रस्थान कर गए और सभ्यता का पतन हो गया ।

के.यू.आर.कनेडी ने मोहन जोदड़ों से प्राप्त नर कंकालों का परीक्षण करके यह निष्कर्ष दिया कि सभ्यता का पतन मलेरिया, महामारी जैसी प्राकृतिक आपदाओं के कारण हुआ । कुछ विद्वान आर्थिक दुर्व्यवस्था को सिन्धु घाटी सभ्यता के पतन का कारण निरुपित करते हैं । सैन्धव नगरों की समृद्धि का मुख्य कारण पश्चिमी एशिया, विशेषकर मेसोपोटामिया की सुमेरियन सभ्यता के साथ व्यापार था जो 1750 ई0 पू0 के आस–पास अचानक समाप्त हो गया और इस सभ्यता का नगरीय स्वरुप समाप्त हो गया।

अभी हाल ही में आई.आई.टी. और भारतीय पुरातत्व विभाग के वैज्ञानिकों ने लगभग 4350 साल पहले सिंधु घाटी सभ्यता के खत्म होने की वजह सूखे को बताया है और

एक शोध में पता लगा है कि यह सूखा कुछ साल या कुछ दशक नहीं बल्कि 900 साल तक चला था । भूगर्थशास्त्र और भूगौलिकी विभाग के शोधकर्ताओं ने पिछले 5000 साल के दौरान मानसून के पैटर्न को पढ़ा और पाया कि लगभग 900 साल तक उत्तर पश्चिम हिमालय में बारिश न के बराबर हुई । इस कारण सिन्धु एवम् सहायक नदियों में पानी की कमी आई तथा ये लोग गंगा–यमुना घाटी की ओर पलायन कर गए । इन वैज्ञानिकों ने यह भी दावा किया कि सिंधु घाटी सभ्यता 5500 साल नहीं बल्कि 8000 साल पुरानी थी । इस लिहाज से यह सभ्यता मिश्र और मेसोपोटामिया की सभ्यता से पहले की हुई । वैज्ञानिकों का यह शोध प्रतिष्ठित रिसर्च पत्रिका 'नेचर' में प्रकाशित हुआ । यह लेख दुनिया भर में सभ्यताओं के उद्‌गम को लेकर नई बहस छेड़ सकता है। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि इस सभ्यता का अन्त अचानक न होकर एक दीर्घकालीन प्रक्रिया का परिणाम था । अतः इसके लिए किसी एक कारण विशेष को उत्तरदायी ठहराना समीचीन नहीं होगा ।

सैन्धव सभ्यता की देन

परवर्ती भारतीय सभ्यता के अधिकांश तत्वों का मूल हमें भारत की इस प्राचीनतम सभ्यता में दिखाई देता है । सैन्धव सभ्यता की खोज ने हमारे इतिहास को एक सातत्य प्रदान किया है । भारतीय (हिन्दू) सभ्यता के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, कलात्मक पक्षों का आदि रुप हमें सैधव सभ्यता में प्राप्त हो जाता है । सामाजिक जीवन ने हम चातुर्वणे व्यवस्था के बीज सैधव सभ्यता में पाते हैं । आर्थिक जीवन के क्षेत्र में हम पाते हैं कि कृषि, पशुपालन, उद्योग धन्धों, व्यापार–वाणिज्य आदि का संगठित रुप से प्रारम्भ, सैधववासियों ने ही किया । यहीं के निवासियों ने ब्राह्व जगत से सम्पर्क स्थापित करने का मार्ग प्राप्त किया जो बाद में सदियों तक विकसित होता रहा । भारतीय आहत मुद्राओं पर अंकित कुछ प्रतीक सैंधव लिपि के चिन्हों जैसे हैं जबकि साँचों में ढालकर तैयार की गई मुद्रायें अपने आकार–प्रकार के लिए सैधव मुद्राओं की ऋणी है ।

सैंधव सभ्यता का सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रभाव हिन्दू धर्म तथा धार्मिक विश्वासों पर दिखाई देता है । मार्शल ने उचित ही सुझाया है कि हिन्दू धर्म के प्रमुख तत्वों का आदि रुप हमें सैंधव धर्म में प्राप्त हो जाता है। सैंधव सभ्यता में माता देवी जो बाद में शाक्त धर्म के रुप

में दिखाई देती हे, वही पुरुष देवता जिसे ऐतिहासिक काल के शिव का आदि रुप स्वीकार किया गया है । यहां से लिंग पूजा के प्रमाण मिलते हैं । कालांतर में हिन्दू धर्म में इसे ही शिव का प्रतीक मान लिया गया ।

सैंधव सभ्यता में वृक्ष पूजा के प्रमाण मिलते हैं । विभिन्न मुद्राओं पर अंकित पीपल के वृक्ष, टहनी, पत्तियों आदि से स्पष्ट है कि पीपल को पवित्र मानकर उसकी पूजा की जाती थी । कालान्तर में हम पाते हैं कि बौद्ध तथा हिन्दू दोनों ही धर्म में पीपल को पवित्र मानकर उसकी पूजा की जाती थी। सैंधव सभ्यता से प्राप्त विभिन्न देवी–देवताओं, पशु–पक्षियों आदि की मूर्तियों से स्पष्ट है कि वहाँ के लोग मूर्ति पूजा में विश्वास करते थे तथा अपने देवी देवताओं की मूर्तियाँ बनाते थे । अतः इस निष्कर्ष से बचना कठिन है कि कालान्तर का हिन्दू धर्म सैंधव धर्म का ही विकसित रुप है ।

धर्म के समान भारतीय कला में विभिन्न तत्वों का मूल रुप भी हमें सैंधव कला में दिखाई देता है । भारतीयों के दुर्ग निर्माण तथा प्राचीरों के निर्माण की प्रेरणा यहीं के कलाकारों ने दी थी । सुनियोजित ढंग से नगर बसाने का ज्ञान भी हमें हड़प्पा संस्कृति से ही प्राप्त होता है। सैंधव सभ्यता की एक प्रमुख देन नगर जीवन के क्षेत्र में है । पूर्ण विकसित नगरीय जीवन का सूत्रपात इसी सभ्यता से हुआ । सुरक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता इत्यादि के क्षेत्र में सैंधव लोगों ने बाद की पीढ़ियों को दिशा निर्देशन किया है । आज के संदर्भ में हम राज्य के निर्माण के इतिहास को जानने का प्रयास करते हैं तो इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि हड़प्पा की सभ्यता के संदर्भ में राज्य जैसी संस्थाएँ मौजूद थी ।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सैंधव सभ्यता में केवल नगरों का ही अन्त हुआ, सम्पूर्ण सभ्यता का नहीं । इसके सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा ग्रामीण जीवन से सम्बन्धित सभी तथ्य न केवल अवशिष्ट रहे अपितु उन्हें आज भी भारतीय जन–जीवन में न्यूनाधिक परिवर्तन के साथ देखा जा सकता है ।

सन्दर्भ सूची

– के.सी. श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, पृ0 संख्या 44, 47, 56, 69, 70

– रोमिला थापर, Early India, पृ0 संख्या 80, 83, 85

– रामशरण शर्मा, प्राचीन भारत, पृ0 संख्या 66, 67, 68, 71

– के.के.थवल्याल, सिन्धु सभ्यता, पृ0 संख्या 176

– इंडिया टूडे, 13 फरवरी, 2002 में प्रकाशित रिपोर्ट

– अमर उजाला, 24 मार्च, 2000 में प्रकाशित सूचना पर आधारित

– टाईम्स ऑफ इंडिया, नई दिल्ली, 1 अप्रैल, 2004 में प्रकाशित सूचना पर आधारित

– नवभारत टाइम्स, 9 अगस्त, 2016/24 सितम्बर, 2016/4 मार्च 2017 / 16 अप्रैल 2018 में प्रकाशित रिपोर्ट पर आधारित

– IGNOU प्रारंभिक राज्य सरंचना, पृ0 संख्या 4, 6